प्रैस विज्ञप्ति
For Immediate Release

फोर्टिस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट ने 48 वर्षीय मरीज़ में लगाया भारत का पहला सब्कटेनियस इम्प्लांटेबल डीफाइब्रिलेटर (एस-आईसीडी)

यह उपकरण कुछ मरीज़ों को पारम्परिक आईसीडी से अधिक लाभ देता है; हृदय और रक्त नलिकाओं को स्पर्श किये बिना, सडन कार्डिक अरैस्ट के जोखिम वाले मरीज़ों को सुरक्षा प्रदान करता है

लगभग 80% सडन कार्डिक अरैस्ट, वैंट्रिकुलर अरिद्मियाज़ के कारण होते हैं जो मरीज़ को समय पर होश में ला कर रोके जा सकते हैं

नई दिल्ली, 20 जनवरी 2015: एक और अभिनव पहल में फोर्टिस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट के डॉक्टरों ने भारत में पहली बार 48 वर्षीय एक मरीज़ में सब्कटेनियस इम्प्लांटेबल डीफाइब्रिलेटर (एस-आईसीडी) लगाया है जिससे बिहार के रहने वाले हृदय के इस मरीज़ को नई ज़िन्दगी मिली है। एस-आईसीडी सिस्टम को उन मरीज़ों में लगाने के लिये स्वीकृत है जिन्हें जानलेवा री-अरिद्मिया के कारण सडन कार्डिक अरैस्ट का जोखिम रहता है और जिन्हें पेसमेकर की आवश्यकता नहीं होती। इस मरीज़ का इलाज फोर्टिस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट के चेयरमैन डॉ अशोक सेठ और कार्डिक पेसिंग एंड इलैक्ट्रोफिज़ियोलॉजी के निदेशक डॉ अनिल सक्सैना ने किया जिन्होंने मरीज़ में यह उपकरण लगाया।

48 वर्षीय मरीज़ श्री अरविन्द सहाय के हृद्य को अक्तूबर 2014 में पड़े हार्ट अटैक से काफी नुक्सान पहुँचा था, और उनका हृदय केवल 25-30 प्रतिशत ही पंप कर पा रहा था। हार्ट अटैक के बाद उन्होंने एन्जियोग्राफी और एन्जियोप्लास्टी करवाई जिसमें तीन स्टैंट लगाये गये थे लेकिन कभी कभी सांस फूलने लगती थी। उनके हृदय की खराब हालत के कारण अचानक मृत्यु का जोखिम काफी था, इसलिये सब्कटेनियस आईसीडी लगाने का फैसला किया गया।

फोर्टिस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट के चेयरमैन डॉ अशोक सेठ कहते हैं, "फोर्टिस ऐस्टकॉर्ट्स, कार्डिक केयर की दिशा में निरन्तर अभिनव उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है। भारत में एस-आईसीडी का यह पहला मामला, आईसीडी की ज़रुरत वाले उन अनेक हृदय रोगियों के लिये आशा की किरण लेकर आया है जिन्हें अचानक मृत्यु का जोखिम बना रहता है और जिनकी नसें ज्यादा अच्छी हालत में नहीं हैं। यह उन मरीज़ों के लिये भी एक उम्मीद है जो 'प्रोहिबिटिव वैस्कुलर ऐक्सैस इशुज़' से पीड़ित हैं और जिन्हें ट्रांसवीनस लीड से बड़े संक्रमण का अधिक

जोखिम रहता है। बस कुछ समय की बात है और इस टैक्नॉलॉजी का प्रसार बढ़ जाएगा और मरीज़ों को उनके सामर्थ्य के भीतर ही जल्दी से ठीक होने का एक और उपाय मिल जाएगा।"

डॉ सेठ का यह भी कहना था, "अचानक हृदय गति रुकने से मृत्यु, भारत में स्वास्थ्य का एक प्रमुख मुद्दा है, और भारत में होने वाली कुल मौतों का लगभग 10 प्रतिशत है। इनमें से 80 प्रतिशत मौतें वैंट्रिकुलर अरिद्मियाज़ के कारण होती हैं, जिनमें से अधिकाँश मरीज़ों को समय पर होश में ला कर बचाया जा सकता था। इम्प्लांटेबल डीफाइब्रिलेटर्स (आईसीडी) ने, अचानक हृदय गति रुकने का जोखिम कम करके ऐसे मरीज़ों के लिये परिदृश्य बदल दिया है, और पूरी तरह से बाहरी सब्कटेनियस आईसीडी इस दिशा में एक ऐतिहासिक प्रगति है।"

सब्कटेनियस आईसीडी नयी तरह का एक उपकरण है जिसे कार्यशील रखने के लिये अन्य उपकरणों की तरह उसका कोई हिस्सा दिल के चैम्बर में नहीं ले जाना पड़ता। ये पूरी तरह बाहर रह कर कार्य करता है और केवल त्वचा के नीचे रहता है। इस उपकरण के फायदों को देखते हुए, हृदय बीमारी से पीड़ित अधिकाधिक लोगों का इस प्रतिरोपण से इलाज किया जा सकता है। इस तकनीक से कई फायदे मिलते हैं जैसे संक्रमण का कम जोखिम, हृदय की नसों को भेदने की ज़रूरत न पड़ना, और समय बीतने के साथ जटिलताएं पैदा होने की आशंका कम होना। लेकिन इन फायदों के बावजूद, चूंकि यह उपकरण हृदय की गति के अनुरूप नहीं होता, इसलिये आईसीडी की ज़रुरत वाले कुछ मरीज़ों के लिये सब्कटेनियस आईसीडी उपयुक्त नहीं है।

कार्डिक पेसिंग एंड इलैक्ट्रोफिज़ियोलॉजी के निदेशक डॉ अनिल सक्सैना ने कहा, "एस-आईसीडी लीड को पसलियों और सीने की हड्डी के साथ लगाया जाता है। इसकी कामयाबी की दर पारम्परिक आईसीडी के बराबर है, जबकि जटिलताएँ पैदा होने की दर कम है। विशेषकर, रक्त प्रवाह में संक्रमण पहुंचने और लीड नाकाम रहने की दर कम है। एस-आईसीडी कम उम्र के मरीज़ों के लिये खासतौर पर फायदेमंद है जिन्हें लंबे समय के लिये आईसीडी थिरैपी की ज़रूरत होती है, इसलिये हृदय के भीतर लीड लगाने का दीर्घ काल में जोखिम बना रहता है। हृदय में डालने के लिये चूँकि नसों को भेदना नहीं पड़ता, इसलिये यह उपकरण सुरक्षित है, लगाने में आसान है और इसे लोकल ऐनैस्थीसिया और सीडेशन के तहत प्रतिरोपित करने में करीब एक घंटा लगता है। भविष्य में और विकसित होने पर यह उपकरण सस्ता भी हो सकता है।"

डॉ सक्सैना ने यह भी कहा, "इस उपकरण की एक और बड़ा फायदा है कि इसे दो साल तक के बाल-मरीज़ों में भी लगाया जा सकता है। इस उम्र के मरीज़ों में भी इसके बेहतर फायदे मिलते हैं। चूंकि इसे त्वचा के नीचे लगाया जाता है इसलिये यह मधुमेह के मरीज़ों के लिये भी एक बड़ी

राहत है जिन्हें यह विकल्प चुनना पड़ता है क्योंकि यह छोटा होता है, इसलिये रिकवरी तेज़ी से होती है।"

डॉ सोमेश मित्तल, फैसिलिटी निदेशक, फोर्टस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीच्यूट, कहते हैं, "कार्डियोलॉजी के क्षेत्र में हम अग्रणी हैं और वयस्क तथा बाल मरीज़ों के कार्डिक प्रोसीजर्स में हमने कई तरह की पहल की हैं। इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए डॉ सेठ ने एक और बड़ा कदम उठाया और एक और 'पहल' संस्थान के नाम कर दी, जो कार्डिक केयर में उनकी प्रतिबद्धता और जुनून का प्रतीक है।"

मरीज़ के परिजनों के लिये यह एक बड़ी राहत है। उनका कहना है, "हम डॉक्टरों की टीम का आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने हमारे परिवार के सदस्य को नई ज़िन्दगी दी है। कार्डिक केयर के क्षेत्र में उठाये गये इस विशाल कदम पर हम उन्हें बधाई देना चाहते हैं। पहले तो यह टैक्नीक केवल विदेशों में ही उपलब्ध थी। लेकिन अब हृदय उपचार के बेहतरीन अस्पतालों में से एक में यह इलाज उपलब्ध हो जाने से, मरीज़ों के परिजनों का ना केवल समय बचेगा बल्कि खर्च में भी काफी कमी आएगी।"

एस-आईसीडी का निर्माण अमरीका की एक कंपनी, बॉस्टन साइंटिफिक करती है और इस उपकरण को अमरीकी एफडीए की स्वीकृति प्राप्त है। पारम्परिक आईसीडी का आरम्भ जहाँ 20 साल पहले हुआ था, वहीं यह एस-आईसीडी केवल दो वर्ष पुराना है और दो महीने पहले ही भारत में इसका आगमन हुआ है। दुनिया में यह उपकरण आने के बाद से अब तक केवल लगभग 12000 सब्कटेनियस प्रतिरोपण किये गये हैं।

<u>फोर्टिस ऐस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट</u>

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट (एफईएचआई), दिल्ली, हृदय सम्बन्धी देखभाल के क्षेत्र का प्रणेता और उत्कृष्टता का केन्द्र, अपने अभूतपूर्व कार्यों और अनगिनत हृदय रोगियों को सेवा प्रदान करने के 25 वर्ष मना रहा है, जिससे इस उत्कृष्ट प्रतिष्ठान में उपचार का लाभ उठाया जा सका। क्लिनिकल विशेषज्ञता और अत्याधुनिक मैडिकल टैक्नोलॉजी से लैस इस अस्पताल ने कार्डिक बाईपास सर्जरी, मिनिमलि इन्वेसिव सर्जरी, इंटरवैंशनल कार्डियोलॉजी, नॉन-इन्वेसिव कार्डियोलॉजी, पैडिऐट्रिक कार्डियोलॉजी और पैडिएट्रिक कार्डियक सर्जरी के नए मानदंड स्थापित किये हैं। आज तक, एफईएचआई 1,72,000 से अधिक एंजिओग्राफ़ी, 90,000 से अधिक कार्डियक सर्जरी, और लगभग 52,000 कोरोनरी एंजिओप्लास्टी के अलावा अनेक जीवन रक्षक प्रोसीजर्स सफलतापूर्वक सम्पन्न कर चुका है। भारत का पहला ट्रांस-कैथिटर एओर्टिक वॉल्व इम्प्लांटेशन (टीएवीआई) और बायोरिज़ोरेबल वस्कुलर स्कैफल्ड (बीवीएस) के अलावा इस अस्पताल को ऐशिया-प्रशान्त की पहली डायरैक्शनल ऐथ्रैक्टमी, एंजिओस्कोपी, ड्रग इल्युटिंग स्टैंटिंग

आदि सम्पन्न करने का गौरव हासिल है। पिछले कई सालों में, एफईएचआई ने देश विदेश के 19 अस्पतालों और हार्ट कमांड केन्द्रों में हार्ट केयर नैटवर्क खड़ा किया है। इसने ई-आईसीयू जैसा क्रांतिकारी कार्यक्रम भी शुरू किया जिससे दूरदराज़ तक समय पर नाज़ुक देखभाल उपलब्ध करवाई जा सकी। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिच्यूट को अनेक पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जा चुके हैं जिनमें बैस्ट कार्डियोलॉजी हॉस्पिटल के लिये दिया गया सबसे नवीनतम पुरस्कार, 2012 और 2013 के लिये आईसीआईसीआई लोम्बार्ड और सीएनबीसी टीवी18 का इंडिया हैल्थकेयर अवॉर्ड है और प्राइवेट कार्डिक वर्ग अस्पताल में द वीक नीलसन बैस्ट हॉस्पिटल्स सर्वे 2014 में इसे पहला स्थान मिला।

अधिक जानकारी के लिये कृपया संपर्क करे:

फोर्टिस हैल्थकेयर लिमिटिड.	एमएसएलग्रूप, दिल्ली
निभा भंडारी व्यास: +91-9811065557, Nibha.vyas@fortishealthcare.com **विद्या पवन कपूर:** +91-9899996189, vidya.kapoor@fortishelathcare.com	**शिवानी शर्मा: +91 9999216424** shivani.sharma@mslgroup.com